CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 04

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   भारत में हरित क्रांति का मुख्य उद्देश्य देश को खाद्यान्न मामले में आत्मनिर्भर बनाना था, लेकिन इस बात की आशंका किसी को नहीं थी कि रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल न सिर्फ खेतों में, बल्कि खेतों से बाहर मंडियों तक में होने लगेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग खाद्यान्न की गुणवत्ता के लिए सही नहीं है। लेकिन जिस रफ्तार से देश की आबादी बढ़ रही है, उसके मद्देनज़र फसलों की अधिक पैदावार ज़रूरी थी । समस्या सिर्फ रासायनिक खादों के प्रयोग की ही नहीं है। देश के ज्यादातर किसान परंपरागत कृषि से दूर होते जा रहे हैं। दो दशक पहले तक हर किसान के यहाँ गाय, बैल और भैंस खूँटों से बँधे मिलते थे। अब इन मवेशियों की जगह ट्रैक्टर-ट्रॉली ने ले ली है। परिणाम स्वरूप गोबर और धूरे की राख से बनी कंपोस्ट खाद खेतों में गिरनी बंद हो गई। पहले चैत-बैसाख में गेहूँ की फसल कटने के बाद किसान अपने खेतों में गोबर, राख और पत्तों से बनी जैविक खाद डालते थे। इससे न सिर्फ खेतों की उर्वराशक्ति बरकरार रहती थी, बल्कि इससे किसानों को आर्थिक लाभ के अलावा बेहतर गुणवत्ता वाली फसल मिलती थी।

   i. भारत में हरित-क्रांति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
   ii. जैविक खाद किसे कहते हैं?
   iii. हरित क्रांति का क्या दुष्परिणाम सामने आया?
   iv. रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा देने का क्या कारण था?
   v. जैविक खाद की क्या विशेषता होती है?
   vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

   i. विदुषी कक्षा में बैठकर अपनी सहेली रेखा की प्रतीक्षा करने लगी। (संयुक्त वाक्य में बदलिए।)
   ii. जैसे ही उसने औषधि ली, उसका रक्तचाप सामान्य हो गया। (वाक्य-भेद बताइए/ संयुक्त वाक्य में बदलिए)
   iii. प्रतिस्पर्धा में प्रथम आने वाले छात्र को बुलाओ। (मिश्र वाक्य बनाइए।)
   iv. उन्होंने मूर्ति को देखा और रुक गए। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)

3. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए- (4)**

   i. दादा जी के द्वारा हम सबको पुस्तकें दी गईं। (कर्तृवाच्य में)
   ii. उससे चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)
   iii. वह तो उठ भी नहीं सकती। (भाववाच्य में)
   iv. उन्होंने उछलकर डोर पकड़ ली। (कर्मवाच्य में)

4. **निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों के पदों के पद-परिचय दीजिए- (4)**

   i. हम <u>स्वतंत्रता</u> का स्वागत करते हैं।
   ii. <u>मैं</u> चाहता हूँ तुम विद्वान बनो।
   iii. वहाँ <u>चार</u> छात्र बैठे हैं।
   iv. तुम <u>सदा</u> सत्य बोलो।

5. **निम्न प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें- (4)**

   i. रौद्र रस का स्थायी भाव लिखें।
   ii. 'घृणा' किस का स्थायी भाव है?
   iii. “अब प्रभु कृपा करौ एहि भांती, सब तजि भजन करहुँ दिन राती।'' में रस बताइये।
   iv. 'कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात, भरे भौंन में करत हैं नैननु हीं सब बात।' में कौन-सा रस है?

6. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

   किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, “बाबा! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।' खाँ साहब मुसकराए| लाड़ से भरकर बोले, “धत् ! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं । तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई। तब क्या ख़ाक रियाज़ हो पाता । ठीक है बिटिया, आगे से नहीं पहनेंगे, मगर इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है, फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या हैं, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

   i. शिष्या के टोकने को बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा क्यों नहीं माना?

ii. किसी भी कला या कार्य की सफलता में रियाज़ का कितना योगदान होता है, गद्यांश के आधार पर लिखिए।

iii. 'तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई।' उपर्युक्त कथन में युवावर्ग के लिए क्या संदेश है?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. पाठ के आधार पर बालगोबिन के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

    ii. नवाब साहब ने अपनी नवाबी का परिचय किस प्रकार दिया? 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर लिखिए।

    iii. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर फादर कामिल बुल्के की जो छवि उभरती है उसे अपने शब्दों में लिखिये।

    iv. कॉलेज से पिताजी के लौटने पर लेखिका उनके किस व्यवहार को देखकर आश्चर्यचकित रह गई थी?'एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

    v. मन्नू भंडारी के लेखकीय व्यक्तित्व निर्माण में शीला अग्रवाल की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

8. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (6)**

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;
एक की नहीं,
दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म;

i. "ढेर सारी नदियों के पानी का जादू का भाव स्पष्ट कीजिए।

ii. कवि बार-बार कहता है एक के नहीं, दो के नहीं, हजार-हजार के'? कारण स्पष्ट कीजिए।

iii. "हजार-हज़ार खेतों" का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बताइए हजारों खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म किसके लिए सहायक होता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. उत्साह कविता में बादल के माध्यम से कवि निराला के जीवन की झलक मिलती है। इस कथन से आप कितने सहमत/ असहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

ii. संगतकार में त्याग की उत्कट भावना भरी है-पुष्टि कीजिए।

iii. मनुष्य का मन दुविधाग्रस्त कब होता है तथा उसके किन दुष्परिणामों को उसे भुगतना पड़ता है? छाया मत छूना कविता के आधार पर बताइए।

iv. कन्यादान कविता का मूल भाव लिखिए।

v. परशुराम की स्वभावगत विशेषताएँ क्या हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

i. शिशु का नाम भोलानाथ कैसे पड़ा? माता का अँचल पाठ के आधार पर बताइए।

ii. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

iii. ऐसा कौन-सा दृश्य लेखिका ने देखा जिसने उनकी चेतना को झकझोर डाला? "साना-साना हाथ जोड़ि" पाठ के आधार पर संक्षेप में लिखिए।

11. **आतंकवाद : एक विकराल समस्या** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए। **(10)**

- प्रस्तावना
- विश्व में आतंकवाद
- भारत में आतंकवाद
- आतंकवाद रोकने के उपाय
- उपसंहार।

OR

महात्मा गाँधी विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- भूमिका,
- जीवन का प्रारम्भ,
- भारत आगमन और संघर्ष,
- देश आजाद कराने में भूमिका व उनकी महत्ता,
- उपसंहार।

OR

जीवन की प्रबल अभिलाषा विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- मेरी आकांक्षा
- आवश्यक योग्यता
- तैयारी।

12. आए दिन चोरी और झपटमारी के समाचारों को पढ़कर जो विचार आपके मन में आते हैं, उन्हें किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र के रूप में लिखिए। **(5)**

OR

विद्यालय में दसवीं और बारहवीं कक्षा के अच्छे परिणामों पर प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर सुझाव दें कि उन्हें और अच्छा कैसे बनाया जा सकता है?

13. पेंसिल बनाने वाली किसी प्रसिद्ध कम्पनी की ओर से 25-50 शब्दों में विज्ञापन लेखन कीजिए। **(5)**

OR

आधुनिक तकनीक से तैयार **घड़ी** का विज्ञापन तैयार कीजिये।

CBSE Class 10 - Hindi A
Sample Paper - 04

Answer
Section A

1. i. भारत में हरित-क्रांति का मुख्य उद्देश्य देश को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना था और बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करना था।
   ii. गोबर,धूरे की राख और पत्तों से बनी खाद को जैविक खाद कहते हैं।इसमें किसी भी प्रकार के रसायनों का प्रयोग नहीं होता।
   iii. हरित क्रांति के कारण रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग खेतों में फसलों को तैयार करने और मंडियों में फलों-सब्जियों आदि को पकाने में होने लगा जो खाद्यान्न की गुणवत्ता के लिए सही नहीं है।
   iv. देश की जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि के कारण उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए फसलों की अधिक पैदावार जरुरी थी। जैविक कृषि से यह पूर्ति संभव नहीं थी इसलिए रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा देना पड़ा।
   v. **जैविक** खाद से खेतों की उर्वरा शक्ति बनी रहती है । इसमें लगत भी कम आती है जिससे किसानों को आर्थिक लाभ होता है और बेहतर गुणवत्ता वाली फसल भी मिलती है।
   vi. आधुनिक बनाम प्रारंपरागत कृषि

Section B

2. i. विदुषी कक्षा में बैठ गई और अपनी सहेली रेखा की प्रतीक्षा करने लगी।
   ii. मिश्र वाक्य है। उसने औषधि ली और उसका रक्तचाप सामान्य हो गया।
   iii. उस छात्र को बुलाओ जो प्रतिस्पर्धा में प्रथम आया है।

   अथवा

   जो छात्र प्रतिस्पर्धा में प्रथम आया है उसे बुलाओ।
   iv. जब उन्होंने मूर्ति देखी तब वे रुक गए।
3. i. दादा जी ने हम सबको पुस्तकें दी।
   ii. वह चल नहीं सकता।
   iii. उससे तो उठा भी नहीं जाता/ जा
   iv. उनके द्वारा उछलकर डोर पकड़ ली गई।
4. i. **स्वतंत्रता-** संज्ञा, भाववाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।
   भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।
   ii. **मैं-** सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, 'चाहता हूँ' क्रिया का कर्ता।
   iii. **चार-** विशेषण, संख्यावाचक, निश्चित संख्यावाची, 'छात्र' संज्ञा की संख्या बताने वाला।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, विशेष्य- ' छात्र' ।

iv. **सदा-** अव्यय, क्रिया विशेषण, 'बोलो' क्रिया की अवधि की सूचना दे रहा है।

5. i. रौद्र रस का स्थायी भाव 'क्रोध' है।
   ii. 'घृणा' वीभत्स रस का स्थायी है।
   iii. पंक्ति में 'शांत रस' है।
   iv. पंक्ति में 'श्रृंगार रस' है।

Section C

6. i. शिष्या के टोकने को बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा नहीं माना, क्योंकि उसके विचारों और व्यवहार में उदारता व अपनत्व का भाव था।
   ii. किसी भी कला या कार्य की सफलता के लिएअभ्यास का होना बहुत ही आवश्यक है। अभ्यास के बिना कला या कार्य के स्तर और गुणवत्ता में कमी आने लगती है, यही कारण था कि बिस्मिल्ला खाँ आजीवन अभ्यास करते रहे।
   iii. उपर्युक्त कथन में युवावर्ग के लिए यह संदेश है कि बनाव-श्रृंगार पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य (उद्देश्य) के प्रति एकनिष्ठता और एकाग्रता रखनी चाहिए। तभी वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ ये थी कि कबीर के सीधे-सादे पद उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते थे | इन पदों को सुनकर बच्चे-औरतें मंत्रमुग्ध हो जाते थे | हलवाहों के पैर एक विशेष क्रम-ताल में उठने लगते थे | उनका संगीत लोगों के मन को झंकृत कर देता था | ऐसा प्रतीत होता था कि उनके संगीत के स्वर की एक तरंग सीधे स्वर्ग की ओर जा रही है और दूसरी लोगों के कानों की ओर | उनके गीत समय, ऋतु और महीनों के अनुरूप होते थे |

   ii. अपनी नवाबी का परिचय देने के लिए नवाब साहब ने खीरे को खाने के स्थान पर उसकी फांकों को सूंघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया | इसके बाद उन्होंने इस प्रकार डकार ली मानों उनके लिए उसे सूंघना ही पर्याप्त है | इस सारे क्रियाकलाप को करने के बाद वे लेट गए जैसे बहुत थक गए हों | लेखक को दिखाने के लिए उन्होंने डकार भी ली |

   iii. फादर कामिल बुल्के का रंग गोरा था। सफेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, वात्सल्य और ममत्व से परिपूर्ण नीली आँखें थी। बाँहें सदा दूसरों को गले लगाने को आतुर रहती थीं।अपने प्रियजनों के प्रति इतनी आत्मीयता रखते कि अपने आशीर्वादों से लोगो के मन को लबालब भर देते थे। दुख की घड़ी में भी अपने प्रियजनों को ऐसे सांत्वना देते थे कि वो अपना सारा दुख भूल जाता था।

   iv. कॉलेज से अनुशासनहीनता की शिकायत पर जब पिताजी को बुलाया गया तो पहले तो वह बहुत नाराज़ हुए पर जब कॉलेज में उन्होंने देखा कि हर विद्यार्थी के मुँह पर लेखिका का ही नाम है तब प्रिंसिपल से उन्होंने कहा कि मेरी लड़की जो कुछ कर रही है वह तो पूरे देश की पुकार है | घर आने पर पिताजी ने बेहद गदगद स्वर में जब

यह बात बताई तो इसे सुनकर लेखिका आश्चर्यचकित रह गई |

v. शीला अग्रवाल लेखिका के कॉलेज में हिन्दी अध्यापिका थीं तथा खुले दिमाग वाली प्रबुद्ध महिला थीं। उन्होंने लेखिका की सीमित समझ के दायरे को बढ़ाया | साहित्य के प्रति उनका लगाव बढ़ाया | देश की स्थिति को जानने-समझने का जो सिलसिला पिताजी ने शुरू किया था, शीला अग्रवाल ने उसे सक्रिय भागीदारी में बदला | उनकी जोशीली बातों के कारण ही लेखिका के मन में अंकुरित देशप्रेम की भावना को एक विशाल वृक्ष का आकार दे दिया और वे देशभक्ति के रास्ते पर चल पड़ी |

8. i. ' ढेर सारी नदियों के पानी का जादू' इस पंक्ति का भाव है कि फसल को पैदा करने में बहुत सारी नदियों के पानी का योगदान होता है क्योंकि इसी पानी से सिंचाई करने पर फसलें तैयार होती है।

ii. इस पंक्ति के माध्यम से कवि बताना चाहता है कि फसल को तैयार करने के लिए एक या दो नदियों का नहीं बल्कि हजारों नदियों के पानी का जादू फसल तैयार करता है। उसी प्रकार एक या दो किसानों से नहीं बल्कि हजारों लाखों किसानों के हाथों के स्पर्श से फसल तैयार होती है, साथ ही साथ एक या दो खेतों की मिट्टी ही नहीं अपितु हजारों खेतों की मिट्टी की उर्वरा शक्ति फसल तैयार करने में सहायक होती है। इसलिए कवि बार बार इन शब्दों का प्रयोग करता है।

iii. 'हजार हजार खेतों'का अर्थ है अनेक खेत अर्थात असंख्य खेत, जिनकी उपजाऊ मिट्टी में फसलें तैयार होती है। हजार हजार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म फसल उगाने के लिए सहायक होता है। इन्हीं खेतों की उर्वरा शक्ति से फसल तैयार होती है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. 'उत्साह' कविता से निराला के जीवन की झलक मिलती है | निराला एक क्रांतिकारी कवि थे | वे समाज के लोगों में नवीन उत्साह जगाना चाहते थे | स्वाभिमानी निराला वज्र तुल्य कठोर थे तो भिक्षुओं, मजदूरों, निर्धनों के प्रति उनके मन में करुणा का सागर भी लहराता था।

ii. संगतकार मुख्य गायक की गरजदार आवाज़ में अपनी गूँज मिलाता है। सदा मुख्य गायक के सहायक के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है | वह मुख्या गायक के बुझते स्वर को सँभाले रहता है। ऊँचा गाने की प्रतिभा होने पर भी वह मुख्य गायक के स्वर से अपनी स्वर नीचा रखकर उसका सम्मान करता है जो संगतकार की मनुष्यता है।

iii. जब मनुष्य लाभ -हानि, उचित -अनुचित, सफलता -असफलता के भ्रम में फँस जाता है, तब मन में साहस रहते हुए भी मनुष्य दुविधा ग्रस्त रहता है। जिसके कारण निर्णय नहीं कर पाता कि वांछित कार्य को करें या न करें। छाया मत छूना कविता के आधार पर कवि बताना चाहते हैं कि मनुष्य के लिए असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हुए भी वह मनुष्य मानसिक रूप से दुखी हो जाता है। जिसके कारण उसका साहस व्यर्थ चला जाता है।

iv. 'कन्यादान' कविता नारी-जागृति से संबंधित है। इसमें स्त्री के परंपरागत रूप से हटकर यथार्थ रूप का बोध

कराया गया है। यह कविता स्त्री की कमज़ोरियों को भी उजागर करती है। यदि स्त्री अपनी कमज़ोरियों के प्रति सचेत हो जाए, अपनी कोमलता और सरलता के प्रति सजग हो जाए तो वह शक्तिशाली बन सकती है और प्रतिकूलताओं पर विजय पा सकती है। आज भी ससुराल में पुत्रवधू की स्थिति सबसे हीन है इसलिए उस पर तरह तरह के अत्याचार किए जाते हैं कभी-कभी पुत्रवधू को मारने-पीटने धमकाने यहाँ तक कि जलाकर मार देने की घटनाएँ भी सामने आती है। इन सभी घटनाओं के प्रति स्त्रीयोँ को जागृत करना ही कन्यादान कविता का मूल उद्देश्य है।

v. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में गोस्वामी तुलसीदास ने परशुराम को वीर योद्धा, क्रोधी, बाल-ब्रह्मचारी, अहंकारी तथा क्षत्रिय कुल के विनाशक कहां हैं तथा उनकी वाणी अत्यंत कठोर है। शिवधनुष तोड़ने पर वे लक्ष्मण को 'फरसा' दिखाकर उन्हें डराने का प्रयास करते है। तथा बार-बार उन्हें अवगत कराते हैं कि मैं एक महान योद्धा हुँ और आप मेरे सामने कुछ भी नहीं हो।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. शिशु का मूल नाम तारकेश्वर नाथ था। उसके पिता शिवभक्त थे | सुबह नहला-धुला कर वे उसे अपने पास पूजा में बिठा लेते | समीप बिठाकर वे उसके ललाट पर भभूत लगाकर त्रिपुंडाकार का तिलक लगा देते | लम्बी जटाएं होने के कारण वह खासा बमभोला प्रतीत होता | पिताजी शिशु से कहते कि बन गया भोलानाथ | फिर तारकेश्वर नाथ न कहकर धीरे-धीरे उसे भोलानाथ कहकर पुकारने लगे और फिर नाम हो गया भोलानाथ।

ii. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी गुलामी एवं चाटुकारिता पूर्ण मानसिकता को दर्शाती हैं। सरकार का हर कार्य केवल खानापूर्ति के लिए था न कि कर्तव्य बोध के लिए। स्वतंत्र होने के बावजूद भी भारतीय सरकार विदेशी उच्चाधिकारियों को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। सरकारी तंत्र उस अंग्रेज अधिकारी जार्ज पंचम की नाक लगाने के लिए चिंतित है, जिसने हम पर विभिन्न अत्याचार किए थे।

iii. प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कई दृश्य झकझोर गए। लेखिका जब प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य में डूबी हुई थी; उसी समय उसका ध्यान पत्थर तोड़ती हुई पहाड़ी औरतों पर गया। जिनके शरीर तो गुंथे हुए आटे के समान कोमल थे किन्तु उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे। उनमें से कुछ की पीठ पर बँधी एक बड़ी टोकरी में उनके बच्चे भी थे। इतने स्वर्गीय सौन्दर्य के बीच मातृत्व और श्रम साधना के साथ-साथ भूख, मौत, दैन्य और ज़िदा रहने की जंग जो पहाड़ों में रास्ता बनाने वाली ये श्रमिक औरतें झेल रही हैं। बर्फ से ढके आधे हरे काले पहाड़ जिन पर ताजी बर्फ का पाउडर छिड़का गया हो गया हो। चिकने - चिकने गुलाबी पत्थरों के बीच इठला कर बहती चांदी की तरह चमकती बनी ठनी तीस्ता नदी और दूध की धार की तरह झर - झर गिरते जलप्रपात ।प्राकृतिक सौन्दर्य में इन दृश्यों ने लेखिका की चेतना को झकझोर डाला।

Section D

11. आतंकवाद का शाब्दिक अर्थ है- भय अथवा दहशत का वातावरण अर्थात् किसी व्यक्ति, समुदाय अथवा राष्ट्र के द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्धि अथवा निहित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाने वाली हिंसात्मक, राष्ट्रद्रोही एवं गैरकानूनी गतिविधियाँ आतंकवाद कहलाती हैं।

आतंकवाद का एक ही उद्देश्य होता है-हिंसा के माध्यम से लोगों को भयभीत करना एवं विश्व की शान्ति भंग करना। ऐसे लोग मासूम ,गरीब जनता की भावनाओं का फायदा उठा कर अपने गलत इरादों को अंजाम देते हैं , निर्दोष लोगों को अपना शिकार बनाते है । सबसे बड़ा आतंकी हमला 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका पर हुआ जिसने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया। आज रूस, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, भारत एवं पाकिस्तान,श्रीलंका आदि देश आतंकवाद की समस्या से जूझ रहे हैं।

स्वतन्त्रता के बाद भारत में आतंकवाद के अनेक चेहरे उभरकर आए हैं। कभी वह क्षेत्रवाद के रूप में कभी भाषावाद के रूप में तो कभी पूर्व में पंजाब में यह आग भयंकर रूप में उभरी थी। जम्मू-कश्मीर में अभी भी इनकी गतिविधियाँ चरम पर हैं। भारत में सबसे भयंकर आतंकी हमला 26 नवम्बर, 2008 को हुआ था। जब कुछ आतंकियों ने कुछ ही घण्टों में पूरी मुम्बई को अपने कब्जे में कर लिया था।13 दिसम्बर, 2001 को भारत की संसद पर आतंकी हमला एक तरह से हमारे देश को खुली चुनौती थी।

भारत में आतंकवाद की समस्या के लिए हमारी राजनीतिक नीतियाँ ही दोषी हैं। राजनीति के सुख के लिए हमारे नेता किसी भी हद तक जा सकते हैं। उन्होंने वोट के लालच में जाति, सम्प्रदाय, धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता आदि के जो बीज बोए थे, वे आज पेड़ बनकर खड़े हैं। बढ़ती हुई बेरोजगारी एवं धार्मिक उन्माद ने भी आतंकवाद को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है।

सरकार ने आतंकवादियों के विरुद्ध कार्यवाही के लिए टाडा कानून बनाया है। जाँबाज सैनिक और अर्द्धसैनिक बल निरन्तर सीमा की रखवाली कर रहे हैं।

OR

भूमिका

किसी भी देश, समाज, परिवार के निर्माण में कुछ ऐसे लोगों का योगदान अवश्य होता है जो स्वहित की चिंता न कर के परहित के लिए सर्वस्व समर्पित कर देते हैं और स्वयं के लिए कुछ भी नहीं चाहते हैं। इन्हीं लोगों में स्वर्णाक्षरों में अंकित महात्मा गांधी जी का नाम है । आज भारत में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो महात्मा गाँधी के नाम से परिचित न हो। वैश्विक स्तर पर भी यह नाम किसी के लिए अनजाना नहीं है। पूरी दुनिया में उनका नाम बड़े सम्मान तथा आदर से लिया जाता है। देश के प्रति उनका योगदान अमूल्य है इसी योगदान के कारण ही स्वतंत्रता के बाद उन्हें भारत का 'राष्ट्रपिता' घोषित किया गया। अपनी सत्य एवं अहिंसा की नीति के बल पर उन्होंने भारत को अंग्रेजों से स्वतन्त्र करवाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

जीवन का प्रारंभ

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी और माता का नाम पुतलीबाई था | इनके पिता पोरबन्दर के दीवान थे तथा माता अत्यन्त धार्मिक महिला थीं। माता के इन्हीं गुणों को इन्होंने अपने जीवन में धारण किया। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था। गाँधीजी की आरम्भिक शिक्षा पोरबन्दर में हुई थी। एक बार बचपन में उन्होंने "सत्य हरिश्चंद्र" नाटक देखा जिसे देख कर उन्होंने आजीवन सत्य निष्ठा के व्रत के पालन करने का निश्चय किया। वे उच्च-शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गए, वहाँ सन 1891 में इन्होंने बैरिस्टरी पास की।गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा जी के साथ हुआ था जिन्होंने आजीवन उनके साथ आजादी के संघर्ष में उनका साथ दिया। गाँधी जी एक मुकदमा लड़ने दक्षिण अफ्रीका गए जहाँ के कटु अनुभवों ने उनकी दिशा को परिवर्तित कर दिया।

भारत आगमन और संघर्ष

दक्षिण अफ्रीका में गोरों-कालों में हो रहे भेदभावों को देखकर इनका मन क्षुब्ध हो गया | उस रंगभेद नीति के उन्मूलन में इन्होंने वहाँ सराहनीय कार्य किया। इसके बाद इनकी ख्याति चारों ओर फैल गई। तत्पश्चात् इन्होंने भारत आकर उन्हीं सत्याग्रह, हड़ताल ,अनशन जैसी नीतियों को लागू किया और 'चम्पारण' के किसानों को अंग्रेजों के कर से मुक्ति दिलाई। इस प्रकार इन्होंने भारतीय राजनीति में पदार्पण किया और एक के बाद एक अनेक आंदोलन जैसे- 1919-20 में असहयोग आंदोलन, 1930 के सविनय अवज्ञा और 1947 के भारत छोड़ो आंदोलन के सूत्रधार रहे। उन्होने सत्य -अहिंसा के बल पर अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया।

देश आज़ाद कराने में इनकी भूमिका और महत्ता

भारतीय जनता अंग्रेजों की दासता से मुक्त होना चाहती थी इसलिए उसे गांधी जी जैसे महान नेता की जरूरत थी । इनका मानना था कि शक्ति संपन्न ब्रिटिश सरकार से भारत को मुक्ति लाठी और बन्दूक के बल पर नहीं मिल सकती इसलिए उन्होंने सत्य और अहिंसा की शक्ति का सहारा लिया। उन्होंने स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिये अनेक आन्दोलन किए, जैसे- असहयोग आन्दोलन, दांडी यात्रा, भारत छोड़ो आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन आदि। महात्मा गाँधी ने करो या मरो का नारा देकर भारतीयों में उत्साह तथा जोश का संचार किया और प्रत्येक आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। गाँधी जी ने स्वतंत्रता की जो अलख जगाई उसे फिर न बुझने दिया और अंततः भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ |

सन् 1947 तक भारतीय राजनीति में गाँधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण इस काल को गाँधी युग की संज्ञा दी गयी। गाँधी ने अपने देश की प्रगति तथा मानवीय हितों की रक्षा में अभूतपूर्व योगदान दिया। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने गोली मार दी। गोली लगते ही वे 'हे राम' कहकर गिर पड़े | इसी के साथ ही उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई | निधन से सारा देश शोक के सागर में डूब गया |

उपसंहार

गाँधी जी आज भले ही हमारे बीच न हों, किन्तु गाँधीवाद के नाम के उनके विचार आज भी पूरी दुनिया को राह दिखाते हैं। उनके जन्मदिन 2 अक्टूबर को पूरे विश्व में अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारत में यह दिन 'गाँधी जयन्ती' के

नाम से राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है।

सत्य, अहिंसा व धर्म का राजनीति में प्रयोग करके गाँधी जी ने समाज-सुधारक के रूप में जातिवाद, छुआछूत, पर्दाप्रथा, नशाखोरी, साम्प्रदायिकता आदि बुराइयों से संघर्ष किया और समाज का कल्याण किया इसलिये वे भारतीय जनमानस में 'बापू' के नाम से अमर हुए। उनका पूरा जीवन भारतवासियों के लिये ही नहीं वरन पूरी मानव जाति के लिये अनुकरणीय हैं।

OR

प्रस्तावना:-

संसार में शायद ही कोई ऐसा प्राणी होगा जिसकी कोई अभिलाषा न हो | किसी को यश की चाह होती है, किसी को धन की चाह होती है, कोई लेखक बनना चाहता है तो कोई फ़िल्मी अभिनेता | कोई डॉक्टर ओर इंजिनियर बनकर अपार धन-दौलत कमाना चाहता है तो कोई सैनिक बनकर देशहित के लिए अपने प्राणों का बलिदान करना चाहता है |

मेरी आकांक्षा:-

प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होता है कि वो अपने जीवन में कोई सफल मुकाम प्राप्त करे | मुझे दूसरों को पढ़ाना अच्छा लगता है इसलिए मेरी प्रबल आकांक्षा है कि मैं डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक बनूं। मेरे पिताजी भी एक अध्यापक हैं इसलिए अध्यापन का गुण तो मुझे विरासत में मिला है | वे इंटर कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं डिग्री कॉलेज में हिन्दी प्राध्यापक बनूँ। बचपन से ही मुझे पढ़ने-पढ़ाने का शौक है | मैं घर पर भी अपने भाई-बहनों को पढ़ाता हूँ | डिग्री कॉलेज के अध्यापकों का समाज में मान-सम्मान तो है ही, साथ ही उनका वेतन भी आकर्षक होता है। यही नहीं अपितु उन्हें समाज में भी वे प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं तथा उन्हें 'जॉब सैटिस्फेक्शन' भी मिलता है। इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण बात तो ये है कि एक अच्छा अध्यापक बच्चों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें उन्नति की राह पर ले जाता है | राष्ट्र निर्माण का उत्तरदायित्व अध्यापक पर ही निर्भर करता है इसलिए मैंने प्राध्यापक बनने का विचार किया।

आवश्यक योग्यता:-

प्राध्यापक बनने के लिए हाईस्कूल से लेकर एम. ए. तक 55 प्रतिशत अंक होने अनिवार्य हैं। मेरे हाईस्कूल से लेकर एम. ए. तक, औसतन 70 प्रतिशत अंक हैं तथा प्रत्येक परीक्षा मैंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। प्राध्यापक बनने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) की नेट परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है क्योंकि उच्च शिक्षा सेवा आयोग उन्हीं अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाता है जिन्होंने नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो।

तैयारी:-

पिछले दो वर्ष से मैं नेट परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ। यूजीसी प्रतिवर्ष जून और दिसम्बर में नेट परीक्षा का आयोजन करती है। मैं एक बार इस परीक्षा में बैठ भी चुका हैं परन्तु असफल रहा अब पुनः अपनी कमियों को दूर कर इस बार दिसम्बर में आयोजित होने वाली परीक्षा में बैठूँगा | मुझे अपनी तैयारी पर पूरा भरोसा है और इस बार की नेट परीक्षा पास कर लूंगा।

'नेट' पास करने के बाद मुझे निश्चय ही प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति मिल जाएगी | देश की उन्नति में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि वही बच्चों का सही मार्गदर्शन करता है | एक अध्यापक बनकर मैं देश की भावी पीढ़ी का दिशा निर्देशन करने में सफलता प्राप्त कर सकूँगा | ऐसा करके मैं अपनी अभिलाषा पूर्ण कर सकूँगा।

उपसंहार:-

अपने परिश्रम और लगन से प्राध्यापक अनेक बालकों के जीवन को उचित मार्ग पर ले जाकर उन्हें जीने योग्य बनाते हैं | अतः यह बड़ा ही पुनीत कर्म है |

12. सेवा में,
सम्पादक,
नव भारत टाइम्स,
नई दिल्ली
विषय- क्षेत्रीय चोरी और झपटमारी जैसे अपराधों के संबंध में
महोदय,
मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र का नियमित पाठक हूँ। आपके समाचार पत्र के माध्यम से मैं जिम्मेदार अधिकारियों का ध्यान इस विकराल समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जिससे हम सब पीड़ित हैं । हमारे क्षेत्र में आजकल चोरियाँ तथा महिलाओं की चेन झपटना, उनके साथ अभद्र व्यवहार करना, इस प्रकार के अपराध तेजी से बढ़ते ही जा रहे हैं। जहाँ सुनो वहीं पर ऐसी घटनाएँ रोज पढ़ने और देखने को मिलती है। इन्हीं घटनाओं से समाचार पत्र पूरा भरा रहता है। कल रात को मेरे पड़ोस के लाला रामलाल जी के यहाँ भारी चोरी की वारदात हो गयी। चोरों ने योजनबद्ध तरीके से अपना काम किया जिसे देख कर जनता और पुलिस दोनों की आँखें खुली रह गई। आए दिन क्षेत्रों में कोई-न-कोई चोरी होती रहती है। लोग शराब पीकर चोरी व झपटमारी करते हैं तथा पुलिस सिर्फ तमाशा देखती रहती है | अगर किसी के खिलाफ कार्यवाही हो गई तो अगले ही दिन वह खुलेआम घूमता पाया जाता है। पीड़ित को कोई इंसाफ मिलता हो ऐसा दिखाई नहीं देता।
कृपया हमारे इस पत्र को अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करने का कष्ट करें जिससे कि इसे पढ़कर पुलिस के उच्च अधिकारी वर्ग का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित हो तथा वे सम्बन्धित अधिकारियों को सख्त आदेश दे सकें और हमारी समस्या का समाधान हो सके।
सधन्यवाद
भवदीय
पवन कुमार
54, पश्चिम विहार, नई दिल्ली
दिनांक : 17 जनवरी, 2019

OR

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

एम.डी.एच

द्वारका सेक्टर - 6,

नई दिल्ली

विषय- दसवीं और बारहवीं परीक्षा के अच्छे परीक्षा परिणाम के संदर्भ में

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि हमारा विद्यालय दिल्ली के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में गिना जाता है | शिक्षा के क्षेत्र में प्रसिद्ध होते हुए भी विद्यालय में उत्तम शिक्षा प्रदान करने का कोई भी वातावरण नहीं है। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हमारे विद्यालय में कर्मठ, योग्य, परिश्रमी शिक्षकों का होना आवश्यक है और महत्त्वपूर्ण विषयों के तो अध्यापक ही नहीं हैं ,जिससे शिक्षा प्रणाली अच्छी सुव्यवस्थित व सुचारु रूप से संचालित नहीं हो पा रही है। दसवीं व बारहवीं कक्षा के परिणाम अच्छे लाने के लिए छात्रों और अध्यापकों में पूर्ण रूप से उदासीनता का भाव है। यदि आप अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था कुशल अध्यापकों के निर्देशन में कर सकें तथा बच्चों को शिक्षा के प्रति मार्गदर्शन कर सकें तो अति कृपा होगी। बेहतर परीक्षा परिणाम के लिए कुछ सख्त कदम उठाने की भी आवश्यकता है। विद्यार्थियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए जिससे क्षेत्र में विद्यार्थियों व विद्यालय के नाम रोशन हो | उम्मीद है आप इस समस्या का समाधान अवश्य करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीया

तृप्ति रावत

दिनांक : 17 जनवरी 2019

13.

जो टिकता है वही तो बिकता है!
नटराज पेंसिल   ○ सरल, सहज एवं आकर्षक लिखावट के लिए

- बिना अतिरिक्त ज़ोर लगाये तेज़ी से लिखे
- बार-बार टूटने से मुक्ति
- छात्रों की पहली पसंद
- मक्खन सी चले
- पेंसिल बॉक्स के साथ रबड़ व शॉर्पनर फ्री

शीघ्र सम्पर्क करें:- शॉप नंबर २५, नई सड़क, नई दिल्ली - 6, फोन नं. - 011-2526XXXX

OR

रोलेक्स की घड़ियाँ

प्रथम १००० क्रेताओं को १०% की विशेष छूट !

जानी-मानी प्रतिष्ठित घड़ी निर्माता कम्पनी पेश करती है आधुनिक तकनीक से लैश, समय ठीक करने और सेल बदलने के झंझट से मुक्ति । जो शरीर के तापमान से स्वतः चालित होती हैं। ये स्वतः ही समय और दिनांक ठीक करने में सक्षम हैं। बारिश में भीगने या पानी में गिरने पर भी खराब होने का कोई भी डर नहीं। दिखने में आकर्षक और वाज़िब दाम ।

पता

२५/३ गौरव मार्किट

वैशाली नगर ,जयपुर

दूरभाष- ९००१२५####